सुप्रिया प्रभाकर जोशी, महाराष्ट्र की समृध्द आभूषण संस्कृति, कला समीक्षा , खंड 1,अंक.1 (अप्रैल 2025), पृ. 18-24

महाराष्ट्र की समृध्द आभूषण संस्कृति

सुप्रिया प्रभाकर जोशी*

विश्व में सबसे विशाल एवं महाद्वीप है-एशिया महाद्वीप। भारतीय भूभाग एशिया महाद्वीप का दक्षिणी विस्तार है यह भूभाग का भौगोलिक वर्णन निम्नवत है- मुख्य भूमि ८ डिग्री ४ मिनट और ३७ डिग्री ६ मिनट उत्तरी अक्षांश और ६८ डिग्री ७ मिनट तथा ९७ डिग्री २५ मिनट पूर्वी देशांतर के बीच स्थित है। भारत की संस्कृति बहुआयामी है जिसमें भारत का गौरवशाली इतिहास और सिंधु घाटी की सभ्यता के मिलाप से बनी हुई है।

आज भारत विज्ञान के उन्नति के जोर पर चंद्र, मंगल ग्रह पर उतरकर अपनी क्षमता को प्रदर्शित कर रहा है। भारत वैश्वीकरण के साथ हाथ में हाथ डालकर विश्व के साथ प्रगति कर रहा है किंतु अपनी संस्कृति को भुला नहीं है। इस प्रगतिशील मार्ग को प्रशस्त करने की प्रेरणा हमारे इतिहास, कला एवं सस्कृति में है।

भारतवर्ष में आज २८ राज्य है जिनमें महाराष्ट्र भारत का सबसे धनी एवं समृध्द राज्य है। महाराष्ट्र भारत का तीसरा सबसे बडा राज्य है। महाराष्ट्र में विभिन्न संस्कृतियों जुडाव एक साथ मिलते है। महाराष्ट्र यह साधु-संतों की भूमि है, समाज सुधारकों की भूमि है। इस राज्य में धर्म निरपेक्षता यह एक प्रमुख विशेषता है जो अन्य धर्मों की मान्यताएँ बडे सम्मान से अपनाता है। यही वजह है कि महाराष्ट्र में हिंदु, मुस्लिम, बौध्द, पारसी, ख्रिश्चन, जैन, सिख आदि धर्म तथा उनके पंथ यहाँ पर शांति से रहते है।

महाराष्ट्र की अनेक संस्कृतियाँ उल्लेखनीय एवं लोकप्रिय है। उनमें महाराष्ट्र की सामाजिक संस्कृति गणेशोत्सव,ईद,दिवाली, होली के साथ अनेक राजाओं, समाज सुधारकों के जन्मदिन बडे धुमधाम से मनाएं जाते है। महाराष्ट्र की कला- हस्तकला भी प्रसिध्द है। नृत्यकलाओं में लावणी, गोंधळी, वाघ्या-मुरळी के साथ भारुड, पोवाडा, गवळणी, कीर्तन-भजन, लोकनाट्य, जात्यावरच्या ओव्या, दशावतार आदि कलाएँ सम्मिलित है। महाराष्ट्र की खाद्य संस्कृति में मसालेदार व्यंजन शामिल है, यहाँ पर गेंहू, जवार, बाजरा, चावल, दाल, आदि से व्यंजन बनते है। जिनमें महाराष्ट्र का मिष्टान्न पुरणपोळी प्रसिध्द है। महाराष्ट्र के राजा-महाराजाओं के विजय का डंका बजाते अनेक गढ-किले आज भी खडे है जिन्हें देखकर मन गर्व और अभिमान से प्रफुल्लित होता है । साथ ही नासिक, पुणे, औरंगाबाद की गुफाएँ जो विश्व प्रसिध्द है उनमें औरंगाबाद के एलोरा की सभी गुफाएँ और कैलाश गुफा के जैसी सुंदर गुफाएँ विश्व में कहीं भी नहीं है। महाराष्ट्र के संस्कृति में उल्लेख आवश्यक है यहाँ के वेशभूषा का। वेशभूषा की परंपरा अगर देखी जाएँ तो पुरुषों का पेहराव है धोती-सदरा(शर्ट) और सिर पर पटका। महिलाएँ नौ गज की नऊवारी साडी पहनती थी, आज भी ग्रामीण भागों में महिलाएँ नऊवारी पहनती है। वर्तमान में कुछ महिलाएँ छः गज की साडी परिधान करती है।यहाँ की पैठणी,शालु अधिक प्रसिध्द है। औरंगाबाद के पैठण तहसील में तैयार होनेवाली पैठणी रेशमी धागे से बनती है तो शालु नामक साडी दुल्हन शादी में पहनती है इसका उल्लेख मराठी गीत में भी हुआ है," पदरावरती जरतारीचा मोर नाचरा हवा, आई मला नेसव शालु नवा."

महाराष्ट्र के अनेक संस्कृति के साथ महाराष्ट्र धर्म यह संस्कृति प्रसिध्द है जो यहाँ के निवासी लोगों को धार्मिक सहिष्णु बनाती है जिसकी आज समुचे विश्व को आवश्यकता है। इसी पेहराव के साथ ही महत्व है-आभुषणों का। श्रृंगार करना, सुंदर दिखना यह नारी का पसंदीदा विषय है। विश्व में नारियों को गहनों से कितना लगाव है यह अलग से बताने की आवश्यकता नहीं। महाराष्ट्र के पारंपारिक आभुषणों के बारे में चर्चा

सुप्रिया प्रभाकर जोशी, महाराष्ट्र की समृध्द आभूषण संस्कृति, कला समीक्षा , खंड 1,अंक.1 (अप्रैल 2025), पृ. 18-24

करेंगे।

भारत में आभुषणों का इतिहास प्राचीन है। भारतीय साहित्य में सोलह श्रृंगार की प्राचीन परंपरा रही हैं। आदि काल से ही स्त्री और पुरुष दोनों प्रसाधन करते आए हैं।

प्राचीन संस्कृत साहित्य में षोडश शृंगार की गणना अज्ञात प्रतीत होती है। अनुमानतः यह गणना वल्लभदेव की सुभाषितावली (१५ वीं शती या १२ वीं शती) में प्रथम बार आती है। उनके अनुसार वे इस प्रकार हैं–

आदौ मज्जनचीरहारतिलकं नेत्रांजनं कुडले, नासामौक्तिककेशपाशरचना सत्कंचुकं नूपुरौ।

सौगन्ध्य करकंकणं चरणयो रागो रणन्मेखला, ताम्बूलं करदर्पण चतुरता शृंगारका षोडण।।

१६ वीं शती में श्री रूपगोस्वामी के उज्वलनीलमणि में शृंगार की यह सूची इस प्रकार गिनाई गई है–

स्नातानासाग्रजाग्रन्मणिरसितपटा सूत्रिणी बद्धवेणिः सोत्त सा चर्चितांगी कुसुमितचिकुरा स्त्रग्विणी पद्महस्ता। : ताभ्बूलास्योरुबिन्दुस्तबकितचिबुका कज्जलाक्षी सुचित्रा। राधालक्चोज्वलांघ्रिः स्फुरति तिलकिनी षोडशाकल्पिनीयम्।।

रीतिकाव्य के आचार्य केशवदास ने भी सोलह शृंगार की गणना इस प्रकार की है–

प्रथम सकल सुचि, मंजन अमल बास, जावक, सुदेस किस पास कौ सम्हारिबो।

अंगराग, भूषन, विविध मुखबास-राग, कज्जल ललित लोल लोचन निहारिबो।

बोलन, हँसन, मृदुचलन, चितौनि चारु, पल पल पतिब्रत प्रन प्रतिपालिबो।

'केसौदास' सो बिलास करहु कुँवरि राधे, इहि बिधि सोरहै सिंगारन सिंगारिबो।

यह हिंदी साहित्य में श्रृंगार के कुछ प्रमाण हम देख सकते है।

आर्य,द्रविड के कालखंड से हमें स्त्री और पुरुष आभुषण पहनते हुए दृष्टिगत होते है। सिंधु संस्कृति,मोहनजोदडो और हडप्पाकालीन संस्कृति का शोध कार्य हुआ उसमें मिट्टी के कंगन, शंख के कंगन और स्टेटाइट नामक नरम पत्थर के पावडर से तैयार किए गए मणि मिले,साथ ही इनमें तांबे धातु के गहने भी मिले है। खुदाई के समय स्त्री-पुरुषों के शरीर पर कंगन,गले में माला-हार,कमरबंध, तावीज,मुकुट दृष्टिगत हुए।

महाराष्ट्र में सोने,चांदी के साथ मोती के गहनों का महत्व अधिक है। इन गहनों से केवल सौंदर्य में वृध्दि नहीं होती अपितु यह प्रकृति के लिए भी बडा लाभदायक सिध्द होता है।

१) बाल: महाराष्ट्र में बालों की सुंदरता को बढाने के लिए मोगरा,जाई-जुई,जैसे फुलों का गजरा लगाया जाता है, साथ ही हर प्रकार के गुलाब का फूल लगाया जाता है किंतु कुछ वर्ष पहले सोने के फुल, पीन बालों में पिरोई जाती थी।

अ)अंबाडा फुल:- मराठी में जुडे को अंबाडा कहा जाता है,इस जुडे पर जो सोने का फुल लगाया जाता था उसे अंबाडा फुल कहा जाता है।

आ)जुडा पीन :- जुडे को सजाने के लिए बडे पत्ते के आकार की यह पीन होती है जो जुडे पर लगाई जाती है।

इ)गुलाब पीन:-जुडे को सजाने के लिए ही गुलाब के फुल के जैसा सोने का यह फुल होता था

ई)वेणी:-वेणी नामक यह पीन है जो जुडे में और चोटी जहाँ से शुरु होती है वहाँ पर यह पीन लगाई जाती है यह सारे फुल और पीन बालों का सौंदर्य बढाने के लिए लगाते थे साथ ही चोटी या जुडा ना छुटे इसे बांधकर

सुप्रिया प्रभाकर जोशी, महाराष्ट्र की समृध्द आभूषण संस्कृति, कला समीक्षा , खंड 1,अंक.1 (अप्रैल 2025), पृ. 18-24

रखने का काम यह पीन करती थी।

२) कान: - भारत के विभिन्न राज्यों में कानों में अनेक आभुषण पहने जाते है। महाराष्ट्र में कानों में लवंग,बुगडी,हुजुर,कुडक और कर्णफुल पहने जाते है। लवंग यह कान के बिल्कुल उपरी भाग पर पहना जाता है। मराठी में लौंग को लवंग कहा जाता है, यह गहना लौंग के समान दिखता है इसी कारण इसे लवंग कहते है। लवंग सोने के होती है।

बुगडी यह महाराष्ट्र का पारंपारिक गहना माना जाता है,यह महाराष्ट्र की विशेषता है। इसे दोनों ओर हुक होता है इससे पहनने में सुविधा हो। यह सोने और मोती में उपलब्ध होता है।

कुडक यह कान के सामनेवाले छोटे हिस्से में पहना जाता है।

हुजुर कान में उपर से तीसरे नंबर पर पहनी जानेवाली बालि होती है।

कर्णफुल यह कानों में पहने जानेवाला विशेष आभुषण है। आजकल कर्णफुल की जगह पर झुमका,कुड्या,डुल पहनती हुई नजर आती है। वर्तमान में नवीन आकर्षक डिझाईन्स बाजार में मिलती है उन्हें महिलाएँ पहनती है। केवल श्रृंगार करना इसके पीछे उद्देश्य नहीं होता, अत: कानों के यह गहने ॲक्युप्रेशर का काम यह आभुषण करते है।

३)नाक :-नथ यह नाक में पहनी जाती है। आदिकाल से यह नथ मोती और सोने की होती है। नथ पहने से नारी का अहम भाव अल्प होने में मदद होती है और प्रकृति का स्वास्थ बना रहता है,ऎसा माना जाता है। यह भी माना जाता है कि इससे नारी की अंतर्मुखता बढते हुए आत्म परीक्षण का भाव उत्पन्न होता है ।

वर्तमान में महिलाएँ डायमंड,सोने की लौंग पहनती है साथ ही नोज पीन पहनने की क्रेझ लडकियों में है।

४) गला: - गले में पहने के अनगिनत आभुषण हमें मिलते है। प्राचीन समय में अनेक कीमती पत्थर ,छोटे-छोटे शंख या समुद्र से मिलनेवाले अनेक पदार्थों से माला एवं हार बनाकर महिलाएँ धारण करती थी इसके प्रमाण मिले है। माना जाता है कि पहले रानिया-महारानिया जुगनुओं की माला बनाकर पहनती थी जिसे ' काजव्यांचे दागिने ' कहा जाता था।

i) ठुशी: महाराष्ट्र में ठुशी नामक पहना जाताअ है इसे लाल रंग के रेशमी वस्त्र पर जवार जैसे सोने के मणियों की बुनाई की जाती है । इसमें सोने के मणि ठसाठस भरे होते है इसलिए उसे 'ठुशी' कहा जाता है। ठुशी को चोकर की तरह गले में फीट पहना जाता है। इसमें उपयोग किए मणि जवार की तरह होने के कारण घर में समृध्दि रहती है ऎसी भावना इसके पीछे होती है।

ii) चिंचपेटी : चिंच यानि इमली। इमली के पत्तों की तरह सोने की पेटी पर मोती तथा हीरों से उसे सजाया जाता है, यह सारा रेशीम के धागे से बुना जाता है। यह भी गले पर चोकर की तरह पहना जाता है।

iii)वज्रटीक : वज्रटीक इस आभुषण पर बडा ही नाजुक नक्षी काम होता है।यह गहना तैयार करते समय पुरा ध्यान रखा जाता है कि यह गहना परिधान करने के बाद चुभे नहीं। रेशमी धागों से छोटी सी गद्दी तैयार करके उस पर W आकार की पेटी की गोलाकार माला तैयार की जाती है,उसके बगल में ही गोल मणियों की एक माला की बुनाई की जाती है।

वज्र यह शब्द यहाँ पर सुरक्षापरक प्रयोग हुआ है। महाराष्ट्र की तुळजापुर और कोल्हापुर की देवी के गले में वज्रटीक अवश्य देखने मिलती है।

सुप्रिया प्रभाकर जोशी, महाराष्ट्र की समृध्द आभूषण संस्कृति, कला समीक्षा , खंड 1,अंक.1 (अप्रैल 2025), पृ. 18-24

iv) पोहे हार : पोहा यह अनाज भारत में सभी ओर मिलता है किंतु महाराष्ट्र में पोहा सबसे अधिक नाश्ते के लिए उपयोग में लाया जाता है। इसी पोहे की तरह छोटी-छोटी अनेक पत्तियों को एक साथ मिलाकर एक लडी तैयार होती है उसी को पोहे हार कहते है।

यह हार सोने का बनाया जाता है। यह हार महिलाएँ हैसियत से १-२-३ लेयर तक बनाती है।

v)चपला हार: पोहे हार की तरह छोटी-छोटी पत्तियों को जोडकर बनता है, जो महिलाओं को अधिक प्रिय है।

vi) राणी हार : राणी हार का इतिहास हम राजस्थानी संस्कृति में हमें मिलता है। अनेक राजा-महाराजाओं के घरों में यह राणियों द्वारा धारण किया गया हार है इसलिए इसे राणी हार नाम पडा। यह हार अधिक तर सोने का होता है,यह हार ३-५-७ लेयर में मिलता है।

viii)बकुळी हार: बकुळी हार यानि बकुल या बकल,मौलसरी का फुल कहा जाता है। इस आकार की पत्तियों को कडी से जोडकर यह हार १-२-३ लेयर का सुंदर हार बनता है।

ix)एक दानी: मटार के दाने के समान सोने के मणि जोडकर यह माला तैयार की जाती है।

x)मोहन माळ: चने के दाल के आकार के सोने के मणियों पर सुंदर नक्षी होती है इन मणियों को जोडकर मन को मोहित करनेवाली यह माला होती है। २-३ लेयर या उससे अधिक लेयर में यह उपलब्ध होती है।

xi)लक्ष्मी हार : छोटे गोल पत्तियों पर माँ लक्ष्मी की छवि उतारी जाती है,इन पत्तियों को जोडकर लक्ष्मी हार बनाया जाता है।

xii)पुतळी हार: प्राचीन आभुषणों में सोने की मुद्राएँ(जो पहले का चलन था) एकत्रित करके ' निष्क ' यह आभुषण तैयार हुआ, यही १६-१७वीं सदीं में महाराष्ट्र में पुतळी हार नाम से लोकप्रिय हुआ। इसमें भी सोने की गोल पत्तियों पर लक्ष्मी माँ के साथ हाथियों की छवि देखी जा सकती है। एक माला में ११ सोने की पत्तियाँ होती है उससे यह हार बनता है।

xiii)बेलपानटीक : यह भी महाराष्ट्र का पुराना आभुषण है। बिल्व पत्र या बेल पत्र जो भगवान शिव जी को अर्पण किया जाता है,इस बेल पत्र के आकार समान सोने पत्तों की बुनाई लाल रेशमी धागों पर की जाती है,अत्यंत लुभावना यह हार होता है।

xiv)कोल्हापुरी साज: इस आभुषण को ६० साल से अधिक पुरानी परंपरा है। इस माला पर अनेक शुभ एवं मंगल कारक प्रतीकों का नक्षी काम होता है जैसे:- चंद्र,शंख, चक्र,नाग, कछुआ यह शुभ चिन्ह दोनो ओर होते है। साथ ही अनेक प्रकार की पत्तियों का भी इसमें समावेश होता है,बीच में बडा सा पेंडेंट होता है जिस पर लाल रंग का रत्न होता है। महाराष्ट्र में कोल्हापुरी साज का अलग स्थान है और बडे लोकप्रिय आभुषण है।

xv) मंगलसूत्र: शास्त्रों में विवाहित महिला को मंगलसूत्र जरूर जरूर पहनने की सलाह दी जाती है। इससे वैवाहिक रिश्ते में मजबूती आती है। साथ ही मंगलसूत्र के काले मोतियों से दांपत्य जीवन को किसी की बुरी नजर नहीं लगती है।मां दुर्गा के नौ स्वरूप होते हैं। मंगलसूत्र में 9 मनके होते हैं, जो मां दुर्गा के नौ स्वरूपों का प्रतिनिधित्व करते हैं। मंगलसूत्र के 9 मनके को पृथ्वी, जल, वायु और अग्नि का प्रतीक माना गया है। वहीं मंगलसूत्र के काले मोती से पति और दांपत्य जीवन को बुरी नजर नहीं लगती है।

गले के आभुषणों में मंगलसूत्र का महत्व तो अधिक ही है,इसके साथ ही महाराष्ट्र में चंद्र हार, चितांग,बोर माळ, जोंधळे मणि गुंड,आदि ऎसे मालाओं के प्रकार है।

सुप्रिया प्रभाकर जोशी, महाराष्ट्र की समृध्द आभूषण संस्कृति, कला समीक्षा , खंड 1,अंक.1 (अप्रैल 2025), पृ. 18-24

५) हाथ : महाराष्ट्र में बाहुओं में भी गहने पहने जाते है।

1)बाहु-

i)नागोत्र: नाग के शरीर की तरह गोलाकार करके दर्शनीय भाग में नाग का फन दिखता है,यह बाहु में पहना जाता है।

ii) नागबंद: नाग ने पुरी तरह बाहु को जकडकर रखा हो ऎसा गहना होता है नागबंद।

iii)वाकी: वाकी नामक आभुषण चटई की तरह बुनी हुई प्रतीत होती है, इस पर नाजुक नक्षी काम होता है।

iv)वेळा: वेळा यह गहना थोडा मोटा सा होता है जिसके सामनेवाले भाग में जालीदार नक्षी होती है।

v)बाजुबंद: बाजुबंद यह अलग-अलग डिझाईन उपलब्ध होता है इसका निश्चित एक रुप नहीं होता ।

2)हाथ:

i)पाटल्या: चुडियों के अनेक प्रकारों में यह प्रसिध्द प्रकार है,यहाँ पर प्रत्येक महिला का सपना होता है कि पाटली उसके संग्रह में अवश्य हो। गोल चुडी पर उपर से अनेक कोन दिखाई देते है। इस कोन पर आजकल फुलों की नक्षी भी पायी जाती है।

पाटली यह आभुषण प्राचीन है,मोहनजोदडो के खुदाई में एक स्त्री के हाथों में यह पाटली समान कंगन मिले है।

ii)गहु तोडे: एक चुडी पर गेंहु के दाने के समान सोने के मणि जोडे जाते है यह गहु तोडे हाथों में अत्यंत सुंदर दिखते है। इसे हाथों में पहनने के बाद हाथों में किसी ओर चुडी की आवश्यकता महसुस ही नहीं होती।

iii)कोयरी तोडे: आम इस फल को महाराष्ट्र में अधिक महत्व है। खाद्य संस्कृति में आम रस,आम का आचार महत्वपूर्ण है,वैसे ही आभुषणों में भी आम की गुठली को स्थान मिला है। चुडी पर गुठली के डिझाईन से यह कोयरी तोडे बनते है।

iv)बिल्वर: बिल्वर चुडी का प्रकार है जिसमें विभिन्न फुल-पत्तों के आकार से साथ जालीदार नक्षी अत्यंत सुंदर दिखती है इसे बिल्वर कहा जाता है।

महाराष्ट्र की महिलाएँ प्रतिदिन काँच की चुडियाँ पहनती है, उपर्युक्त चुडियों के प्रकार के साथ पुरण पाटली,शिंदेशाही तोडे आदि चुडियों के प्रकार पहने जाते है।

६) अंगठी: ऊंगली में पहना जानेवाला गहना अंगुठी है।यह महिला व पुरुष दोनों पहनते है,दोनों भी पाँचो ऊंगलीयों में अंगुठी पहनी जाती है। इसकी विविध डिझाईस उपलब्ध है. हीरे,सोना, मोती के साथ अनेक रत्नों की अंगुठीयाँ मनोवांछित फलप्राप्ति के लिए पहनी जाती है।

७) कमरबंध: भारत के प्रत्येक राज्य में कमर बंध यह आभुषण हम देखते ही है। उसी तरह महाराष्ट्र में मोती,रत्न और सोने के कमरबंध प्राप्त होते है, जो महाराष्ट्र के श्रृंगार संस्कृति में महत्वपूर्ण है।

i)मेखला: मेखला यह साडी परिधान करने पर पहने जानेवाला गहना है,जो साडी पर बाईं ओर लगाया जाता है,इसे दो छोर होते है।

ii)छ्ल्ला: छ्ल्ला भी साडी पर बाईं ओर लगाया जाता है जो अधिक तर चांदी का पाया जाता है। उसके सुंदरता बढाने के लिए उसे छोटे घुंघरु भी लगाएं जाते है।

८) पायल: पायल सभी राज्यों में पहनी जाती है। दक्षिण भारत में पायल सोने की भी पहनी जाती है, देश के

सुप्रिया प्रभाकर जोशी, महाराष्ट्र की समृध्द आभूषण संस्कृति, कला समीक्षा , खंड 1,अंक.1 (अप्रैल 2025), पृ. 18-24

अनेक हिस्सों में पायल के विभिन्न प्रकार पाएँ जाते है।

i)गजरी पैंजण: इस पायल के प्रकार पर फुलों की नक्षी होती है, जो एक पट्टी के समान दिखती है और उस पट्टी के नीचे घुंघरु जोडे जाते है। यह पायल झांझरियाँ

के जैसे दिखते है।

ii)तोरड्या: तोरड्या भी पायल का एक प्रकार है। श्रीराम के बाल लीलाओं का वर्णन करते हुए समर्थ रामदास जी कहते है,

कीरीट कुंडले माला विराजे। झळ्झळ गंडस्थळ धननिळ तनु साजै।। घंटा किंकणी अंबर अभिनव गती साजै। अंदवाकी तोडर नुपुर ब्रीद गाजे। ।

वर्तमान में पायल के अनेक डिझाईन्स आज बाजार में मिलती है जिन्हें महिलाएँ बडे ही चाव से पहनती है।

९) जोडवी/बिछिया: विवाहित महिलाएँ जोडवी पहनती है। अंगुठे के बगल के ऊंगली में यह पहने जाते है,इसका चाँदी का होना आवश्यक माना जाता है। कहा जाता है कि इस ऊंगली की नस नारी के गर्भाशय से जुडी होती है इसलिए यह विवाहित महिलाओं का श्रृंगार माना जाता है।

i)मासोळी: यह भी बिछिया का एक प्रकार है,जो पैर के अंगुठे की ओर से चौथी ऊंगली में यह पहनी जाती है। यह मछली के जैसी होती है इस वजह से इसे मासोळी कहा जाता है।

उपर्युक्त सभी अलंकार केवल सौंदर्य में वृध्दि होने के लिए धारण नहीं किए जाते। भारतीय धर्म एवं संस्कृति का आधार विज्ञान है। इसमें से अधिक गहने एक्युपंक्चर तथा ॲक्युप्रेशर का काम करते है। इससे पाचन,रोग प्रतिकार,रक्त संचार कुल मिलाकर प्रकृति स्वास्थ केलिए लाभदायक सिध्द होते है गले में सोने का हार पहनने से विशुध्द चक्र जागृत होता है तो नाभिचर पर कमर बंध पहनने से यह चक्र सक्रिय अवस्था में रहता है। पायल और जोडवे पहनने से जमीन से निकलनेवाली अशुभ शक्तियों से बचाव होता है। पायल यह पैरों निकलनेवाले विद्युत ऊर्जा को सुरक्षित रखते है,साथ ही फॅट्स कम होने में मदद होती है। चूड़ियाँ पहनने से रक्त संचार योग्य गति से होता है, चुडियों से श्वसन संबंधी और हृद्य रोग से भी बचा जा सकता है। जोडवी पहनने से हार्मोन्स संतुलित रहते है,थायरॉईड की तकलीफ नहीं होती,पैर के एक नस पर दबाव आने से गर्भाशय को रक्त संचार होता है।

सत्य यह है कि सोना यह उष्ण धातु है तो चांदी शीतल होती है इसलिए नारीयों ने कमर से उपरी हिस्से में सोने के गहने पहनने चाहिए और कमर से नीचे चांदी पहनने पर जोर दिया जाता है।इससे शरीर का तापमान संतुलित रहता है। बाए हाथ में अंगुठी पहनने से हृद्य को रक्त का संचार होता है। नथ पहनने से नींद संबंधी समस्याएँ,सिर दर्द और प्रसुति समय की वेदना कम होती है। भाल पर कुंकुम लगाना आवश्यक माना जाता है, योग धर्म में माना जाता है कि दोनों भौंहो के बीच आज्ञा चक्र होता है इसीके माध्यम से हमारे मस्तिष्क को हमारे ज्ञानेद्रियों से संदेश भेजा जाता है। इतने सारे लाभ हमारे भारतीय संस्कृति के आभुषण संस्कृति में है। यह सारे पारंपारिक गहने आज ग्रामीण भागों में अधिक दिखाई देते है, शहरों में भी वर्तमान में यह फायदे देखते हुए अनेक महिलाएँ यह गहने पहनने लगी है।

सोना और चांदी के बढते हुए दाम देखते हुए मध्यमवर्गीय लोगों के लिए १ ग्रॅम गोल्ड में सारे श्रृंगार के प्रकार उपलब्ध है।जो नारियाँ यह भी नहीं खरीद सकती वह बेनटेक्स के गहने खरीदती है।

उपर्युक्त विवेचन से हम यही निष्कर्ष निकाल सकते है कि समय कितना भी क्यों न बदल जाए लेकिन

सुप्रिया प्रभाकर जोशी, महाराष्ट्र की समृध्द आभूषण संस्कृति, कला समीक्षा , खंड 1,*अंक*.1 (*अप्रैल* 2025), *पृ. 18-24*

आभुषणों का महत्व कम नहीं हुआ है। संस्कृति के बजाय आभूषण का वैज्ञानिक तर्क यह बताता है कि वह व्यक्ति की उमर बढाता है और स्वास्थ अच्छा रखते है। इन गहनों के टुकडे,डिझाईन्स में उपलब्ध हुए हो लेकिन उनका मुल्य कम नहीं हुआ। यह हमारे पुर्वजों की अनमोल विरासत और आशिर्वाद है,जो एक दीर्घकालीन परंपरा है जिसका गौरव महाराष्ट्र ही नहीं समूचा भारतवर्ष कभी खोयेगा नहीं, ना ही यह गौरव की श्रृंखला खंडित करेगा।